HISTORY

PG- 2nd Semester, CC-5 : History of Ideas.

UNIT- II Modern Ideas, State - Machiavelli

Dr. D.N. Mehta.

'राज्य' के विषय में मैकियावेली के विचार

सन 1469 ई० में एक सामान्य परिवार में जन्मा मैकियावेली बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न था। फ्लोरेंस के इस मैकियावेली को उच्च शिक्षा की प्राप्ति का अवसर तो नहीं मिला। लेकिन लैटिन भाषा की अधिकतम् जानकारी के कारण इसे फ्लोरेंस गणराज्य के गृह एवं विदेश कार्यालय में किरानी (clerk) की नौकरी अवश्य मिल गई। इसकी प्रतिभा से प्रभावित होकर इसे जल्द ही द्वितीय सचिव बना दिया गया। जिस पर वह 14 वर्षों तक कार्य किया। इस 14 वर्षों के काल में ही मैकियावेली राजनीतिक दाव-पेंच एवं कूटनीति से अवगत हुआ। जिसने उसके लेखन को प्रभावित किया। गौरतलब है कि इसी अवधि में मैकियावेली का पोप अलेक्जेंडर षष्ठ एवं उसके पुत्र सीजर बोर्जिया से सम्पर्क स्थापित हुआ। उल्लेखनीय है कि सीजर बोर्जिया जितना निर्दयी था, उतना ही विश्वासघाती और लंपट था। मैकियावेली ने सीजर बोर्जिया को ही सभी शासकों का

Scanned with CamScanner

आदर्श माना। उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द प्रिंस' (The prince) में उसे एक महान् नायक के रूप में चित्रित किया है। राज्य पर मैकियावेली के विचारों का विवरण इस प्रकार है:

I राज्य की उत्पत्ति का प्रधान कारक : शक्ति

'अपने युग का शिशु' मैकियावेली अपनी मातृभूमि इटली की राजनीतिक विखंडता से व्यथित था। इटली के निकट के पड़ोसी देश फ्रांस, स्पेन और इंगलेंड में एक निरंकुश शक्तिशाली राजतंत्र को साकार होते देख रहा था। इटली की राजनीतिक समस्याओं के सामाधान में वह एक शक्तिशाली शासक की भूमिका को महत्वपूर्ण माना। 'राजनीति में यथार्थवादी' मैकियावेली इसी परिप्रेक्ष्य में 'शक्ति' की ओर झुका और वह 'शक्ति' का माला जपने लगा। मैकियावेली के अनुसार, हर मनुष्य न सिर्फ खुद को बल्कि अपनी संपत्ति को हर हाल में सुरक्षित रखना चाहता है। ऐसे में वह स्वभाव से आक्रामक एवं संग्रहनशील हो जाता है। अपनी संपत्ति को सुरक्षित करने के बाद वह और अधिक संपत्ति प्राप्त करने की दौर में शामिल हो जाता है। ऐसी स्थिति में चीजों की स्वाभाविक रूप से कमी हो जाती है। उसके लिए स्थायी प्रतियोगिता एवं संघर्ष शुरु हो जाता है। मैकियावेली के अनुसार, ऐसी ही संघर्षपूर्ण स्थिति में व्यक्ति एवं समाज की सुरक्षा के लिए एक शक्तिशाली राज्य की जरूरत पड़ती है। अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मैकियावेली के अनुसार, राज्य की उत्पत्ति का प्रधान कारक 'शक्ति' है।

II राज्य का मुख्य उद्देश्य : नागरिकों की आर्थिक समृद्धि :

Scanned with CamScanner

अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द प्रिंस' के 17वें अध्याय में मैकियावेली ने लिखा है कि मनुष्य स्वभाव से 'कृतघ्न, चंचल, धोखेबाज, डरपोक' और 'लोभी' (ungrateful, fickle, deceitful, cowardly, and avaricious) होता है। उसके सभी कार्य भय, शक्ति की लिप्सा और आत्मसम्मान से प्रेरित होते हैं। वह तभी तक किसी के साथ रहता है जब तक उससे उसके स्वार्थ की पूर्ति होती है। जैसे ही उसके स्वार्थ की पूर्ति हो जाती है, वह उसका साथ छोड़ देता है। मैकियावेली आगे लिखता है - "मनुष्य अपनी सम्पत्ति छीनने वालों की अपेक्षा अपने पिता के हत्यारे को अधिक सुगमता से क्षमा कर देता है।" इसलिए उसने अपने शासक को परामर्श दिया है कि वह किसी व्यक्ति को मृत्युदंड दे सकता है, परंतु अर्थदंड न दे। इस प्रकार उसके राज्य का उद्देश्य न तो यूनानी दार्शनिकों की दृष्टि से मनुष्य का नैतिक और बौद्धिक विकास करना है और न ही मध्ययुगीन चिंतकों की तरह धार्मिक संस्थाओं द्वारा लोगों को मोक्ष प्राप्त करवाना है। वस्तुतः, उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मैकियावेली के अनुसार, राज्य का मुख्य उद्देश्य केवल नागरिकों को आर्थिक रूप से समृद्ध (Martial prosperity) करना है।

III राज्य की मुख्य कार्ययोजना : शक्ति व सर्वोच्चता की प्राप्ति

सार्वजनिक जीवन के व्यापक अनुभव की वजह से मैकियावेली ने खुली आँखों से देखा था कि राजनीतिक व्यक्तियों के कपटी और षड्यंत्रकारी होने के कारण उसका देश इटली भयानक दुर्दशा का शिकार हुआ था।

Scanned with CamScanner

इसी 'आँखों देखी हाल' के आधार पर मैकियावेली ने मनुष्य को स्वार्थी लोभी, षड्यंत्रकारी एवं कपटी कहा। मैकियावेली के अनुसार, मनुष्य के इस स्वभाव में शिक्षा के द्वारा भी परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। मैकियावेली जोर देकर कहता है कि केवल शक्ति के द्वारा ही मनुष्य के कपटपूर्ण षड्यंत्रकारी व्यवहारों पर अंकुश लगाया जा सकता है। इसी परिप्रेक्ष्य में मैकियावेली ने घोषणा की कि "राजनीति के क्षेत्र में शक्ति (Power) अपने में एक उद्देश्य है और राज्य का मुख्य कार्य शक्ति को पाना, उसे बनाए रखना और उसका विस्तार करना (to aquire, retain and expand power) है।

मैकियावेली आगे कहता है कि वस्तुतः शक्तिशाली होने पर ही राज्य व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान कर सकता है। इस वक्तव्य से मैकियावेली के राज्य की प्रकृति भी स्पष्ट हो जाती है। उसके अनुसार राज्य मनुष्यों द्वारा बनाया गया एक कृत्रिम संस्था है जो अन्य सभी संस्थाओं से उच्च एवं श्रेष्ठ है। इस प्रकार, उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मैकियावेली के अनुसार, राज्य की मुख्य कार्य-योजना शक्ति प्राप्ति के साथ-साथ सर्वश्रेष्ठता बनाए रखना है।

IV शक्तिशाली राजा : सुरक्षा, समृद्धि और स्थायित्व की गारंटी :

सार्वजनिक जीवन की राजनीतिक सक्रियता से हटाकर एकांतवास में भेजे गए मैकियावेली को एक शक्तिशाली राजा में ही समस्या का अंतिम समाधान दिखा। मैकियावेली ने स्पष्ट लहजे में कहा है कि राजा का परम कर्तव्य प्रजा के जान-माल की रक्षा करना है क्योंकि सुरक्षा और सम्पत्ति हर मनुष्य की सबसे बड़ी अभिलाषा होती है। मैकियावेली ने सम्पत्ति से मनुष्य के गहरे जुड़ाव को एक दिलचस्प तर्क से समझाया है।

Scanned with CamScanner

मैकियावेली के अनुसार, संपत्ति की लिप्सा इतनी गहरी होती है कि मनुष्य अपने पिता के हत्यारे को क्षमा कर सकता है, परंतु उस व्यक्ति को वह कभी क्षमा नहीं कर सकता जिसने उसकी सम्पत्ति का अपहरण किया है। इसलिए मैकियावेली ने स्पष्ट कहा है कि एक शक्तिशाली राजा ही देश की आंतरिक विघटनकारी शक्तियों / तत्वों को समाप्त कर सकता है तथा राज्य को बाहरी आक्रमण से बचा सकता है। इस प्रकार, मैकियावेली का मानना है कि एक शक्तिशाली राजा के अंतर्गत ही राज्य में सुरक्षा, समृद्धि एवं स्थायित्व की गारंटी संभव है। इसी आधार पर मैकियावेली अपने राजा को सुझाव देता है कि "राजा को शक्ति पाने, शक्ति बनाए रखने, और शक्ति का विस्तार करने के लिए लगातार प्रयत्न करते रहना चाहिए।

V एक शासक के शक्तिशाली होने के स्वर्णिम सुझाव :

मैकियावेली ने अपनी विश्व विख्यात पुस्तक "दि प्रिंस" के 18वें अध्याय में एक शासक के शक्तिशाली होने के लिए अनेक स्वर्णिम सुझाव दिया है। जिसका विवरण इस प्रकार है :

(i) एक राजा तभी शक्तिशाली हो सकेगा जब मैकियावेली के अनुसार, उसमें तार्किक और पाश्विक विशेषताओं यानी 'लोमड़ी (Fox) और शेर (Lion) के संयुक्त गुणों से युक्त होना चाहिए। अर्थात् राजा को लोमड़ी की तरह अपने मुख्य प्रयोजनों को छिपा कर रखना चाहिए। साथ ही राजा को शेर की तरह भय का साकार रूप होना चाहिए। मैकियावेली के अनुसार, जिस राजा को यह पता होता है कि प्रजा से कैसे व्यवहार करना है। वास्तव में, वह राजा ही प्रजा के जीवन और सम्पत्ति की सुरक्षा कर पाता है।

(ii) मैकियावेली सुझाव है कि एक राजा को अपनी भावनाओं पर

पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए, साथ ही उसे दूसरों की भावनाओं (आवेशों) का लाभ उठाने के लिए तैयार एवं समर्थ होना चाहिए। मैकियावेली यह भी सुझाता है कि उसे स्वार्थी और अवसरवादी होना चाहिए।

(iii) मैकियावेली के अनुसार, एक राजा को राज्य की सुरक्षा हेतु एक शक्तिशाली राष्ट्रीय सेना का गठन करना चाहिए। न तो किसी विदेशी पर और न ही भाड़े के सैनिकों पर भरोसा करना चाहिए।

आलोचना :

मैकियावेली के राज्य संबंधी विचारों की कटु आलोचना की गई है :

(i) मैकियावेली ने मनुष्य को केवल निकृष्ट और स्वार्थी ही माना है। वह यह भूल जाता है कि मनुष्य में दैवी गुण भी होते हैं।

(ii) 'शक्ति' संबंधी विचारों की कटु आलोचना करते हुए विद्वान आलोचकों का मत है कि उसने केवल शक्ति पर ध्यान देकर राजनीतिक शासन-तंत्र के बाकी सभी पहलुओं को अनदेखा कर दिया, जो कतई अपित नहीं है।

(iii) मैकियावेली ने अपने राजा को अपना उल्लू सीधा करने के लिए अवसरवादी होने का सुझाव दिया है। इसीलिए सैबाइन ने मैकियावेली को राजनीतिक चिंतक न मानकर कूटनीतिज्ञ माना है।

इन कटु आलोचनाओं के बावजूद निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि मैकियावेली ही प्रथम चिंतक है जिसने शक्ति की राजनीति का श्रीगणेश किया। आज का युग वस्तुतः शक्ति की राजनीति का युग है। राज्य संबंधी उसके अनेक विचार समकालीन संदर्भ में भी प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. प्रमुख राजनीतिक चिंतक-भाग-2 - डॉ० ब्रजकिशोर झा
2. पाश्चात्य राजनीतिक चिंतक का इतिहास - गंगादत्त तिवारी
3. राजनीतिक सिद्धांतों का इतिहास -4 भाग- प्रगति प्रकाशन
4. A History of Western phelosophy - Bertrand Russell.
5. IGNOU - MA, Pol. Science (Booklet).

Dr. Dayanand Mehta
Assistant professor
(Deptt of History)
Samastipur College, Samastipur
L.N.M.U. Darbhanga.
email - dayanandmehta@gmail.com
Mob - 9470200031, 7250160031

Scanned with CamScanner